

श्रीती राजपूत

२९. ४. १७

तु

उभराव दूर

श्रीमान;

मैं आपके दूरको तहे दिक से
धन्यवाद देती हूँ कि लही समय पर व बहुत
जल्द मुझे आपके द्वारा मदद मिल गई।

मैं आपके उपकार को लदेव
थाद रखूगी !

आपका बहुत बहुत धिया

श्रीती राजपूत